price and export this commodity and also take adequate measures to reduce the price of gunny bags and ensure quality supply of gunny bags. I also suggest that the Jute Corporation be asked to take appropriate measures to protect the interests of the jute growers by purchasing the jute from the doors of the jute cultivators to avoid distress sale by the farmers, and see that the stitching of the mouths of the gunny bags used for packing potatoes/onions, etc. be properly done by the jute mills so that they last at least for two seasons.

MR. SPEAKER: We come to legislative business.

SHRI HARI VISHNU KAMATH (Hoshangabad): On a point of order, Sir, under proviso to sub-rule (2) of rule 376, relating to the arrangement of business as shown in the order paper. The proviso provides for a point of order during the interval between the termination of one item of business and the commencement of another items. Please turn your attention to items 13 and 14.

MR. SPEAKER: We have not come to that yet.

SHRI HARI VISHNU KAMATH: I am on arrangement of business.

MR. SPEAKER: Either you should have raised it in the beginning or you can raise it when we come to items 13 and 14.

SHRI HARI VISHNU KAMATH: Any time it can be raised.

MR. SPEAKER: You can raise it when the House is seized of the matter, either before we start the work or immediately after Question Hour or when we come to items 13 and 14.

SHRI HARI VISHNU KAMATH: Please read the proviso:

> "Provided that the Speaker may permit a member to raise a point of order during the interval between the termination of one item of business and the commencement of another...

MR. SPEAKER: It must relate to that item of business.

SHRI HARI VISHNU KAMATH: Not that item. You do not have enough patience now.

MR. SPEAKER: You can raise it when we come to items 13 and 14.

SHRI HARI BISHNU KAMATH: You may not be in the Chair then.

MR. SPEAKER: That does not matter. Somebody will be in the Chair.

SHRI HARI BISHNU KAMATH: Why not you decide it?

MR. SPEAKER: Legislative Business—Mr. Agarwal.

12.59 hrs.

APPROPRIATION (VOTE ON ACCOUNT) BILL, 1979

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI SATISH AGARWAL). I beg to move.*

> "That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of a part of the financial year 1979-80, be taken into consideration."

MR. SPEAKER: The question is:

> "That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of a part of the financial year 1979-80, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR SPEAKER: We shall now take up the clauses.

---

*Moved with the recommendation of the President.

MR SPEAKER The question is

'That clauses 2 to 4 and the Schedule stand part of the Bill'

The motion was adopted

Clauses 2 to 4 and the Schedules were added to the Bill

Clause 1 the Enacting Formula and the Title were added to the Bill

SHRI SATISH AGRAWAL I move

That the Bill be passed

MR SPEAKER The question is

That the Bill be passed

The motion was adopted

---

13 hrs

DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS) 1979-80 SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS) 1978-79 AND RESOLUTION RE FIFTH REPORT OF RAILWAY CONVENTION COMMITTEE—*Contd.*

MR SPEAKER Shri Durga Chand will now continue his speech

श्री दुर्गा चन्द (कागडा) अध्यक्ष जी म पिछल दिन रेलवे लाइनो के मुतल्लिक कह रहा था कि इस समय हमारे देश में 60,693 किलोमीटर रेलवे लाइन है। यदि डबल ट्रैक को भी शामिल कर ल तो 1,03,325 किलामीटर रलवे लाइन है। आजादी के बाद बीस साल के अर्से म सिर्फ 7097 किलोमीटर नयी रेलवे लाइन बनाई गई है। यदि स्टेट्स के हिसाब से देखा जाये ता यु पी में 8750 किलोमीटर रेलवे लाइन है, मध्य प्रदेश मे 6395 किलोमीटर लाइन है, बिहार में करीब 5 हजार किलामीटर लाइन ह जबकि हिमाचल प्रदेश मे सिफ 255 किलामीटर रेलवे लाइन है और आजादी क बाद हिमाचल प्रदेश म एक इच भी रेलव लाइन नही बनाई गई है। जो भी रेलवे लाइन वहा पर है वह आजादी से पहल की बनी हुई है। मै यह कहना चाहता हू क हिमाचल प्रदेश मे भी रेलवे लाइनो का सर्वे आ है, उसके एस्टिमेट बनाए गए है, उनका एप्रूवल हुआ या नही यह आप जानते होगे मै ने तीन रेलवे लाइने बताई थी उनमे से किसी न किसी को इस साल जरूर टेक-अप किया जाए और उसका निर्माण किया जाये। मुझे खुशी है कि नार्थ ईस्टर्न जान मे 6 लाइनो की शुरुआत की गई है, वहा पर रेलवे लाइनो की जरूरत है, लेकिन मै समझता हू डिस्क्रिमिनेशन नही होना चाहिए, हमारी डिमाड भी जेन्युइन है, उस पर भी आपको गौर करना चाहिए। तीन नयी रेल लाइनें—नागल-तलवाडा, अमृतानगर-पोटा साहब और कालका परमाण— इनके लिए आपको धन की व्यवस्था करके निर्माण कार्य आरम्भ करना चाहिए।

13 0 hrs

[MR DEPUTY SPEAKER *in the Chair*]

उपाध्यक्ष जी पहल जा गाडिया दिल्ली से पठानकोट तक चलती थी वह जम्म तवी तक एक्सटेंड हो गई है। इसका वजह से हिमाचल प्रदेश क कागडा मडी और चम्बा जिले का बडी मशिकल होती है। इस सिलसिल म मैने आपसे पहल ही रिक्वेस्ट की हुई है कि एक एडीशनल ट्रेन चलाई जाय जाकि पठानकोट तक जाए अगर यह मुमकिन नही है ता श्रीनगर एक्सप्रेस क अलावा कश्मीर मेल म कुछ बागीज पठानकोट क लिए लगाई जाये ताकि वहा क लागो का जो दिक्कत है वह दूर हो सक।

इसक अलावा मै यह भी कहना चाहता हू कि रेलवे कन्वन्शन कमेटी, 1977 की रेकमडेशन्स इस हाउस म रखी गई है ताकि यह सदन उसपर भी विचार कर सके। मै समझता हू कि इस कमेटी की रेकमेंडेशन्स से रेलवे डिपाटमट का फायदा हुआ है। इससे रेलवे डिपाटमट का कर्जा घटा है और वह डेवलपमट की तरफ लगाया गया है। म समझता हू यह एक बहुत बडी उपलब्धि हुई है। और मै अपने मत्री महोदय को इस क लिये बधाई देना चाहता हू। जो एक्सपर्ट ग्रुप आन कैपिटल स्ट्रक्चर था जिन्होन फाइनेन्स मिनिस्ट्री से बात की कि रलवे का जो सरप्लस है उस को किस तरह से एप्रोप्रियट किया जाय—जैनरल फड मे, और रलवे के लिये अलग से डवेलपमेंट फड रखा जाये—इस काम म जो कामयाबी हुई है, उस क लिये वे धन्यवाद के पात्र है और इस कमेटी की रिकमेण्डशन्ज को हमें तुरन्त मजूर कर देना चाहिये।

उपाध्यक्ष महोदय, रेलवे में जो तरह-तरह की सुविधाये दी गई है, उन म कुछ कामया है। पिछली दफा मैने दिल्ली से गोहाटी तक सफर किया। उस मे मैने यह देखा कि ट्रेन मे जो कैटरिंग का इन्तजाम था, वह बिलकुल अच्छा नही था। इसी तरह से दिल्ली से कलकत्ता के लिये जो हावडा एक्सप्रेस है, उस में भी केटरिंग का इन्तजाम अच्छा नही है। मैने देखा कि आप के बेयरे लोग खानेवाले को जो बिल देते है—वह गलत होता है, किसी ने अगर वेजीटेरियन खाना खाया है तो उस को नान-वेजीटेरियन खाने का बिल दे देते है, जैसे किसी ने अण्डा नही खाया है तो उस को बिल दूसरा